मजदूरों का अपना कोई देश नहीं होता।

दुनिया के मजदूरो, एक हो !

फरीदाबाद मजदूर समाचार

मजदूरों की मुक्ति खुद मजदूरों का काम है।

दुनिया को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा।

RN 42233

नई सीरीज नम्बर 8 | फरवरी 1989 | 50 पैसे

वास्तविकता और उसकी माँग

आमतौर पर देखने में जमीन चपटी दीखती है। वास्तव में यह गोल है। इसी प्रकार आमतौर पर लोगों को अपनी समस्यायें निजी लगती हैं। वास्तव में हमारी समस्यायें सामाजिक हैं। अत: वास्तविकता को समझना और उसके मुताबिक कदम उठाना मजदूरों के लिए जरूरी है।

यहाँ हम पूंजीवादी वास्तविकता के एक पहलू पर गौर करेंगे। यह पहलू आज मजदूरों के संघर्ष करने के ढंग से जुड़ा है। कारखानों के दायरे में ही हम यहाँ बात करेंगे।

कई पीढ़ियों से रोजमर्रा के सवालों पर मजदूर अपनी-अपनी फैक्ट्री के आधार पर संगठित होते रहे हैं और संघर्ष करते रहे हैं। अपनी फैक्ट्री में हड़ताल करना मजदूरों का शक्तिशाली हथियार रहा है। पर कुछ समय से देखने में आ रहा है कि फैक्ट्री का चक्का जाम कर देना मजदूरों का कोई ज्यादा धारदार हथियार नहीं रहा है। उल्टे, मैनेजमेंटें तालाबन्दियाँ करके मजदूरों को दबाने में सफल हो रही हैं। मजदूरों को मैनेजमेंटों द्वारा फैक्ट्री बन्द करने की धमकी देना अब आम बात हो गई है। इस उल्ट-फेर को कैसे समझें ? और ऐसे हालात में क्या करें ?

पहले हमें फैक्ट्री के मालिकाने में आये परिवर्तन को समझना चाहिए। पूंजीवाद के शुरू के दौर में फैक्ट्री इस या उस मालिक की होती थी। फैक्ट्री में इस या उस आदमी के पैसे लगे होते थे। प्रोडक्शन बन्द होने का मतलब था फैक्ट्री मालिक को नुकसान होना। जितने ज्यादा समय काम बन्द रहता उतना ही अधिक मालिक को नुकसान होता था। इसलिए हड़ताल मजदूरों के हाथ में एक पैना हथियार थी। और मजदूर हड़ताल को जितनी लम्बी खींचते उतनी ही उनकी ताकत बढ़ती जाती थी। हड़ताल से मालिक का भट्टा बैठाया जा सकता था इसलिए हड़ताल या उसकी धमकी के सामने मालिक को मजदूरों से ले-देकर समझौता करना पड़ता था—या फिर गुण्डागर्दी से हड़ताल तोड़नी पड़ती थी।

आज आमतौर पर बड़ी फैक्ट्रियों में जिन लोगों की मैनेजमेंट में चलती है, उनका उसमें दो-चार परसैन्ट से अधिक पैसा नहीं लगा होता। इसलिए उस फैक्ट्री में हड़ताल से मैनेजमेंट में कर्ता-धर्ताओं को डायरेक्ट नुकसान ज्यादा नहीं होता। और कुछ मैनेजमेंटों के लोगों ने तो श्रमिक असन्तोष के नाम पर फैक्ट्री को निचोड़ कर अपना-अपना घर भरने में महारत हासिल कर ली है।

इन हालात में मजदूरों के पुराने तरीके से हड़ताल करने के हथियार की धार कम हो गई है। इसलिए नई हालात में मजदूरों के प्रतिनिधि खींचतान में मैनेजमेंट के सामने काफी ज्यादा कमजोर पड़ते हैं। ऐसे में मजदूरों के नुमाइन्दे या तो जल्दी ही कुचल दिए जाते हैं या फिर वे मैनेजमेंट से मिल जाते हैं।

इस सम्बन्ध में एक दूसरी बात भी समझनी जरूरी है। कोई फैक्ट्री कितना मुनाफे या घाटे में रहेगी यह तय करने की ताकत किसी फैक्ट्री की मैनेजमेंट के हाथों में अब बहुत कम है। बिजली, तेल, ढुलाई व कच्चे और तैयार माल के भावों को तय करने से लेकर टैक्सों के डंडे के जरिये आज सरकारें तय करती हैं कि कहाँ कितना लाभ या हानि होगी। अब सरकारें तय करती हैं कि किसे जिन्दा रखने के लिए सब्सिडी देनी है तथा किसे मरने देना है। इन हालात में एक फैक्ट्री के दायरे में मजदूर ज्यादा प्रभावी कार्रवाई नहीं कर सकते। उल्टा, श्रमिक असन्तोष के एवज में मैनेजमेंटें सरकार से टैक्स आदि में रियायतें माँगती हैं।

रूस की घटनाओं और पोलैंड के मजदूरों के देशव्यापी संघर्ष ने यह भी साफ-साफ दिखा दिया है कि एक देश के दायरे में मजदूरों की मूल समस्यायें हल नहीं होंगी। एक फैक्ट्री या एक उद्योग तक ही किसी देश की सरकार की दादागिरी चलती है। देश-भर के दायरे में जब हिसाब-किताब होता है तब यह तथ्य उभरकर आता है कि देश की सरकार को दुनिया के हिसाब से चलना होगा। इसलिए चक्रव्यूह में फँसी हर देश की सरकार मजदूरों पर दमन-शोषण बढ़ा रही है।

पूंजीवाद एक विश्वव्यवस्था है की वास्तविकता इस प्रकार सामने आती है। इसलिए हर जगह के मजदूरों द्वारा दुनिया के मजदूरों की एकता के लिए कदम उठाने जरूरी हैं। विश्व कम्युनिस्ट पार्टी के गठन की कोशिशें तेज करना इस दिशा में एक कदम है।

मजदूरों की लगातार गिराई जा रही हालत के खिलाफ मजदूरों द्वारा संघर्ष करने जरूरी हैं पर पुराने ढंग के संघर्ष नई हालात में पिटते जा रहे हैं। इसलिए नई परिस्थितियों में सफलता के लिए मजदूरों को नये ढंग से संघर्ष करने होंगे। मैनेजमेंटों से टकराव की स्थिति में अब संघर्ष चलाने के लिए मजदूरों को संघर्ष-समितियाँ चुननी चाहियें और हर रोज आम सभायें करके संघर्ष का कन्ट्रोल अपने हाथों में रखना चाहिए। बीस-पचास-सौ-सौ के दस्ते बनाकर मजदूरों को अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों के पास जाना चाहिए और उन्हें हड़ताल में शामिल करने की कोशिशें करनी चाहियें। हड़ताल में अन्य मजदूरों का शामिल होना, उसका फैलाव और बढ़ता तीखापन ही अब मजदूरों के संघर्ष की राह है। दुनिया में जगह-जगह हो रहे मजदूरों के संघर्ष इस प्रकार फैलकर एक-दूसरे से हाथ मिला सकेंगे। वास्तविकता की यही माँग है और यही हमारी मुक्ति की राह है।

दुनिया में मजदूरों के संघर्ष

दिसम्बर 88 में पेरिस में रेलवे मेन्टेनैन्स वर्करों की हड़ताल तोड़ने के लिए फ्रांस की सरकार ने फौज का इस्तेमाल किया। फ्रांस का राष्ट्रपति खुद को समाजवादी कहता है। नाममात्र के कम्युनिस्ट भी कुछ समय तक उसकी सरकार में मन्त्री थे। असल में सोशलिस्ट-कम्युनिस्ट का लेबल लगाये यह लोग सरकारी पूंजीवाद के पक्षधर हैं। मजदूरों को धोखा देने के लिए पूंजी के यह नुमाइन्दे खुद को सोशलिस्ट-कम्युनिस्ट कहते हैं। मजदूर इन्हें नकली कम्युनिस्ट कहें।

नवम्बर 88 में ब्राजिल में स्टील मजदूरों की हड़ताल तोड़ने के लिए वहाँ की सरकार ने फौज का इस्तेमाल किया था। बात साफ है, हालात जब पुलिस के काबू के बाहर हो जाती है तब पूंजी के नुमाइन्दे दमन के अपने ब्रह्मास्त्र, फौज का इस्तेमाल करते हैं। हाल ही की इन घटनाओं से यहाँ के मजदूरों को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि भारतीय फौज भी मजदूरों के खिलाफ यहाँ के पूंजी के नुमाइन्दों का दमन का ब्रह्मास्त्र है। देशभक्ति, देश की रक्षा आदि का प्रोपेगण्डा पूंजीवादी अफीम है।

अन्य स्थानों की ही तरह फ्रांस में भी तनखाओं का सवाल हाल के मजदूर आन्दोलनों में प्रमुख मुद्दा रहा है। 1982 के बाद से फ्रांस के मजदूरों की असल तनखा 15 प्रतिशत घट गई है। दिसम्बर 86 में फ्रांस के रेल मजदूरों ने बिचौलियों को धत्ता बताकर स्वयं अपना संघर्ष चलाया था। 1988 में नर्सों का आन्दोलन फैलकर सब स्वास्थ्य कर्मियों का संघर्ष बन गया। 29 सितम्बर को 30,000 स्वास्थ्य कर्मियों ने जलूस निकाला; 6 अक्तूबर को 60,000 का जलूस निकला; और 13 अक्तूबर को जलूस में एक लाख लोग शामिल हुए। रंग-बिरंगे बिचौलियों को मजदूर वर्ग के इस बढ़ते असन्तोष को बिखेरने के लिए काफी पापड़ बेलने पड़े। पर असलियत लीपा-पोती से कब तक ढकी जा सकती है ? फ्रांसीसी सरकार द्वारा मजदूरों का जीवन स्तर गिराने की कोशिशों के खिलाफ जल, बिजली, डाक, रेलवे, खदान मजदूरों का गुस्सा बढ़ता गया। दिसम्बर 88 में रेल मजदूरों की हड़ताल तो मजदूरों के बढ़ते गुस्से की हुँकार भर है। (सामग्री 'इन्टरनेशनलिज्म' और 'वर्करस वाइस' पत्रिकाओं से ली है।)

पूंजीवादी व्यवस्था के संकट का बढ़ते जाना एक सामाजिक नियम है। मजदूरों पर इस संकट के बोझे को थोपने के प्रयास और उनके खिलाफ मजदूरों के संघर्षों का बढ़ना भी एक सामाजिक नियम है। पर इस वजह से पूंजीवादी युद्ध या मजदूर क्रान्ति की दो संभावनायें ही बनती हैं। कौनसी आगे आएगी ? यहाँ मजदूर वर्ग के सचेत प्रयास का वजन निर्णायक होगा। पूंजीवादी युद्ध मानव-जाति के विनाश की राह है। मजदूर क्रान्ति साम्यवादी समाज में प्रवेश की, मानव खुशहाली की राह है। खुशहाली की राह पर बढ़ने के लिए क्रान्तिकारी आन्दोलन को मजबूत करना जरूरी है।

मजदूर आन्दोलन के बदलते तेवर

दुनिया के अन्य क्षेत्रों की ही तरह भारत में भी मजदूर आन्दोलन के तेवर बदल रहे हैं। इसकी एक झलक के लिए भारत के प्रमुख खदान और भारी उद्योग क्षेत्र की कुछ घटनाओं की यहाँ हम चर्चा करेंगे।

धनबाद के कोयला खदान मजदूरों के एक आन्दोलन के बारे में हमें खत मिला है। इस पत्र में सरकार के भारत कोकिंग कोल लिमिटेड के पीस रेटेड वर्करों के एक संघर्ष का आँखों देखा वर्णन है। धनबाद के निकट 7 नम्बर खदान क्षेत्र के मजदूरों ने मैनेजमेंट, यूनियन नेताओं और गुण्डा गिरोहों से तंग होकर स्वयं को संगठित किया। खदानों में भूमिगत कार्य करने वाले लोडर और ड्रमर मजदूर संगठन बनाने

हमारे लक्ष्य हैं—1. मौजूदा व्यवस्था को बदलने के लिए इसे समझने की कोशिशें करना और प्राप्त समझ को ज्यादा से ज्यादा मजदूरों तक पहुँचाने के प्रयास करना। 2. पूंजीवाद को दफनाने के लिए जरूरी दुनिया के मजदूरों की एकता के लिए काम करना और इसके लिए आवश्यक विश्व कम्युनिस्ट पार्टी बनाने के काम में हाथ बँटाना। 3. भारत में मजदूरों का क्रान्तिकारी संगठन बनाने के लिए काम करना। 4. फरीदाबाद में मजदूर पक्ष को उभारने के लिए काम करना।

समझ, संगठन और संघर्ष की राह पर मजदूर आन्दोलन को आगे बढ़ाने के इच्छुक लोगों को तालमेल के लिए हमारा खुला निमन्त्रण है। बेझिझक मिलें। टीका-टिप्पणी का स्वागत है—सब पत्रों के उत्तर देने के हम प्रयास करेंगे।

सम्पर्क—मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, बाटा चौक के पास, एन० आई० टी० फरीदाबाद—121001

में आगे रहे। वर्करों ने स्वयं अपना माँग-पत्र तैयार किया और 1 दिसम्बर 88 से आन्दोलन छेड़ दिया। 14 दिसम्बर तक मजदूरों ने मैनेजमेंट के पुटकी स्थित क्षेत्रीय कार्यालय के सामने क्रमिक अनशन किया और 14 से आमरण अनशन शुरू किया। मजदूरों ने जुझारू जलूस निकाले और बड़ी संख्या में धरने में शामिल हुए। 16 दिसम्बर को 7 नम्बर क्षेत्र की सब कोयला खदानों में प्रोडक्शन बन्द करके मजदूरों ने मैनेजमेंट के क्षेत्रीय कार्यालय को घेर लिया। सब स्थापित यूनियनों को ठुकरा कर खुद संगठित हुए मजदूरों से मैनेजमेंट ने कहा कि यूनियन लीडरों के जरिये बात करो। मजदूरों ने माँग की कि स्वयं मजदूरों से मैनेजमेंट बात करे। इस आन्दोलन के दौरान मजदूरों ने यह नारे लगाये : भ्रष्ट मैनेजमेंट, भ्रष्ट यूनियन मुर्दाबाद ! भ्रष्ट मैनेजमेंट और भ्रष्ट यूनियन की मजदूरों के खिलाफ साजिश को हम सफल नहीं होने देंगे !

इसी क्षेत्र में दक्षिण-पूर्वी रेलवे का **चक्रधरपुर** भारत के सबसे पुराने रेलवे स्टेशनों में है। यहाँ 5000 रेल मजदूर हैं। खदानों और जंगल के उत्पादन से लदी 8 माल गाड़ियाँ प्रति घण्टा चक्रधरपुर से गुजरती हैं। उड़ीसा के बंडामुंडा से लेकर बिहार के टाटानगर तक फैले हुए सूदखोरी के धन्धे का भी चक्रधरपुर केन्द्र है। रेलवे के 80 % चतुर्थ श्रेणी, 60 प्रतिशत तृतीय श्रेणी और क्षेत्र के 40 प्रतिशत प्राइमरी शिक्षक तक सूदखोरों के चंगुल में हैं। एक सूदखोर रेलवे स्टेशन का क्लर्क है जो कि रेलवे मैन्स यूनियन का कोषाध्यक्ष भी है। बढ़ती सूदखोरी के पीछे भ्रष्ट रेल अफसरों दलाल मजदूर नेताओं, हिन्दूवादी तत्वों, प्रशासन और सूदखोरों का गठबन्धन है। इस गिरोहबन्दी के खिलाफ लड़ने के लिए जनवरी 86 में रेल मजदूरों ने 'संग्राम समिति' बनाकर संघर्ष शुरू किया। मार्च 87 में इसके 5 सक्रिय कार्यकर्ताओं का रातों-रात ट्रान्सफर का हुक्म हो गया। इसके विरोध में मजदूरों के नियम अनुसार कदमों के फेल हो जाने पर जून 87 में 'संग्राम समिति' ने मण्डल रेल कार्यालय के सामने 'सूदखोरी बन्द करने', 'रेल प्रशासन और यूनियन नेताओं के भ्रष्टाचार की जाँच और कानूनी कार्रवाई करने', 'गैर-कानूनी ट्रान्सफर आदेश रद्द करने' आदि के लिए आमरण अनशन शुरू किया। 'संग्राम समिति' में उस समय ज्यादा लोग नहीं थे पर अनशन के पहले दिन रेलवे के चतुर्थ व तृतीय श्रेणी कर्मचारी इसमें शामिल हो गये। दूसरे दिन आस-पास के हजारों गरीब समर्थन में एकत्र हो गये। तीर-धनुष से लैस 5,000 लोग दूर तक के गाँवों से जलूसों में आये। अनशन के तीसरे दिन तमाम रेल मजदूर लड़ाई में शामिल हो गये। रेल रोकने का निर्णय लिया गया। जन-आक्रोश के बढ़ते हिंसात्मक रुख को देखकर प्रशासन झुका। प्रशासन के झुकने का मुख्य कारण रेल मजदूरों के साथ अन्य मजदूरों और गरीबों का एकजुट होना था। पर आमतौर पर रेल मजदूर अन्य मजदूरों के संघर्षों में शामिल नहीं होते। (सामग्री श्रीहर्ष कान्हारे के 'झारखंड दर्शन' पत्रिका में लेख से ली है।)

अलग-अलग जगह काम करने वाले मजदूरों द्वारा एक-दूसरे से जुड़े बिना कोई भी संघर्ष सफलता की ओर नहीं बढ़ सकता। और, बिचौलियों पर निर्भरता छोड़कर मजदूरों द्वारा खुद अपना नेतृत्व करना जरूरी है। ऐसा करने पर ही रुकावटें मजदूरों को साफ-साफ नजर आने लगेंगी। और तभी उन्हें हटाने का सवाल ठोस रूप में उठेगा।

हरियाणा में तीन दिन की औद्योगिक हड़ताल

हरियाणा में किसी भी मजदूर की तनखा 1250 रुपये महीना से कम नहीं होनी चाहिए—एटक-सीटू-बी एम एस-एच एम एस ने कहा। और यह बात न माने जाने पर इन यूनियनों ने 16-17-18 जनवरी को हरियाणा के सब कारखानों में हड़ताल की घोषणा की। 15 जनवरी को यूनियनों ने हड़ताल की घोषणा यह कह कर वापस ले ली कि 625 रुपये पर उनका हरियाणा सरकार से समझौता हो गया है। वैसे, यूनियनों की फूँ-फाँ से पहले ही कुछ बढ़ाने की सरकारी चर्चा चल रही थी।

यूँ तो हरियाणा सरकार के कानून के मुताबिक किसी भी मजदूर की तनखा 540 रुपये महीना से कम इस समय नहीं थी। मजदूर जान लें, महीने में चार छुट्टियों के साथ 540 का कानून था। पर यह कानून भी अन्य पूँजीवादी कानूनों की ही तरह है : दमन के लिए जो कानून में लिखा होता है उससे कई गुना अधिक दमन पुलिस करती है पर जिस कानून से मजदूरों को थोड़ी-बहुत राहत मिल सकती है उसे लागू करवाना आसमान से तारे तोड़ लाने जैसा है। आठ घण्टे काम के लिए 540 रुपये महीना छोटी फैक्ट्रियों, वर्कशापों, कैन्टीनों, होटलों, दुकानों आदि-आदि में काम कर रहे दसियों हजार मजदूरों को फरीदाबाद में नहीं मिलते। 1250 की माँग करने वाली यूनियनों का जिन फैक्ट्रियों में दबदबा है वहाँ भी आमतौर पर कैन्टीन वर्करों को तीन-चार सौ में 12 घण्टे रोज काम करना पड़ता है—बाटा फैक्ट्री इसका उदाहरण है। अतः 625 का कानून भी पूँजीवादी कानून ही रहेगा। वास्तव में लड़-झगड़ कर ही मजदूर अपनी तनखायें बढ़वा सकते हैं। हिन्दुस्तान लीवर की सिवड़ी फैक्ट्री के मजदूरों ने इस तरह अपनी कम से कम तनखा 2432 रुपये महीना करवाई।

हड़ताल के बारे में यूनियनों के साँझे पोस्टरों में और भी कई माँगें थी। एक यूनियन के अलग से भी बड़े पोस्टर में हलवा-पूरी के साथ चटनी भी थी। यह सब इन लोगों के ड्रामे का हिस्सा होता है। ड्रामे की कीमत मजदूरों को चुकानी पड़ती है।

कहीं हड़ताल हो ही न जाए का इलाज भी पहले ही हो चुका था। फरीदाबाद में आमतौर पर यूनियनों ने 16-17-18 जनवरी के बदले में रैस्ट के दिनों में काम करने के समझौते मैनेजमेंटों से किए थे—गेडोर और इलैक्ट्रोनिक्स फैक्ट्रियाँ इसके उदाहरण हैं।

पार्टियों के बड़े लीडर इस किस्म के फर्जी संघर्षों की आड़ में ऊँचे दर्जे की सौदेबाजी करते हैं। और फर्जी संघर्षों के नाम पर पैसे इक्ट्ठे करना यूनियन लीडरों के लिए महत्वपूर्ण बन गया है। इस हड़ताल के नाम पर फरीदाबाद में यूनियन लीडरों की जहां चलती है वहाँ उन्होंने आम मजदूरों से 5-10-15 रुपये चन्दा लिया। इस पैसे का नाम का भी हिसाब मुश्किल है और इस तरह का हजारों रुपया भी यूनियन लीडरों की मोटरसाइकिलों-बोतल-मुर्गों-कोठियों-वर्कशापों-प्रोपर्टीडीलरी में लगेगा।

मजदूरों को असली और नकली संघर्ष में फर्क करना सीखना होगा। हरियाणा में तीन दिन की हड़ताल वाला यह फर्जी संघर्ष समझने के लिए एक मिसाल है।

केरल की एक कहानी

5 हजार मजदूरों वाली मवूर रेयन फैक्ट्री केरल प्रान्त की एक प्रमुख फैक्ट्री है। इसकी मैनेजमेंट बिड़ला ग्रुप की है। जुलाई 85 में मजदूरों के आन्दोलन को कुचलने के लिए बिड़ला मैनेजमेंट ने फैक्ट्री बन्द कर दी थी। केरल सरकार, बिड़ला मैनेजमेंट और मजदूरों के नाम पर दस्तखत के बाद जनवरी 89 में फैक्ट्री खुल गई है। केरल में मजदूरों के खिलाफ सरकार-मैनेजमेंट गठजोड़ की जो कहानी दोहराई गई है उसकी एक झलक यहाँ पेश है ताकि हिन्दी पढ़ने वाले मजदूर असलियत को जान सकें और रंग-बिरंगे धोखेबाजों से बचने की अपनी योग्यता बढ़ा सकें।

1981 में तीन-साला एग्रीमेंट की समाप्ति पर यूनियनों ने मैनेजमेंट को नया माँग-पत्र दिया। इसमें 250 रुपये वेतन वृद्धि, 1978 से मिल रहे 40 प्रतिशत बोनस को जारी रखने आदि की माँगें थी। मैनेजमेंट ने बात-चीत में टालमटोल की और 1982 के लिए 8.33 प्रतिशत बोनस की घोषणा कर दी। मामला लटका रहा। तंग होकर 1985 में एक नये संगठन के साथ मजदूरों ने आन्दोलन शुरू किया। जुलाई '85 में मैनेजमेंट ने फैक्ट्री बन्द कर दी।

अब केरल सरकार की छत्रछाया में हुए एग्रीमेंट के मुताबिक 1981 में माँगें 250 रुपये की जगह मात्र 32 रुपये वेतन वृद्धि होगी तथा अगले पाँच वर्षों तक कोई वेतन वृद्धि नहीं होगी—यानि, 14 साल में 32 रुपये की वेतन वृद्धि ! 40 महीने फैक्ट्री बन्द के दौरान मजदूरों को सालाना इनक्रीमेंट भी नहीं मिलेगी। 1982-83, 83-84, 84-85 के लिए बोनस 8.33 प्रतिशत और एक्सग्रेशिया 10,5 तथा 4 प्रतिशत। रिजर्व मजदूरों को महीने में 13 दिन ही काम मिलेगा। ठेकेदारी जारी रहेगी। वर्क स्टडी स्कीम शुरू होगी और फालतू करार दिए मजदूरों में से सिर्फ 50 को रिजर्व मजदूरों में रखा जाएगा। बाकी को हिसाब लेना होगा। एग्रीमेंट की धारा III उपधारा 6 के मुताबिक 5 साल तक मजदूर आन्दोलन नहीं करेंगे। केरल के मुख्यमन्त्री नयनार तक को कहना पड़ा है कि "सरकार यह दावा नहीं कर सकती कि मजदूरों के सब हितों की रक्षा की गई है।" मुख्यमन्त्री ने यह भी कहा कि यह तो "छोटी कुर्बानियाँ हैं जो मजदूरों को प्रान्त के औद्योगिक विकास के लिए करनी चाहियें।"

मवूर रेयन की बिड़ला मैनेजमेंट के हित में केरल सरकार ने अपने कानून तक बदले हैं। केरल सरकार मवूर रेयन को 2 लाख टन बाँस और सफेदा 250 रुपये प्रतिटन के हिसाब से प्रतिवर्ष देगी। अब तक के कानून के मुताबिक बाँस 305 रुपये टन और सफेदा 550 रुपये टन का रेट था। पास के कर्नाटक प्रान्त में इनका सरकारी रेट 600 रुपये टन है। खुली मण्डी में तो भाव और भी ज्यादा हैं। कच्चे माल के इन भावों से ही बिड़ला मैनेजमेंट को आगामी 5 वर्ष में 80 करोड़ रुपये का लाभ होगा। ऊपर से, मैनेजमेंट पर कच्चे माल के बकाया 5 करोड़ रुपये केरल सरकार ने माफ कर दिए हैं। और कच्चा माल सप्लाई न कर पाने की स्थिति में सरकार मवूर रेयन मैनेजमेंट को कैश में मुआवजा देगी। केरल सरकार ने बिजली कानून में भी फेरबदल करके बिड़ला मैनेजमेंट को दस पैसे यूनिट का रेट लगाया है। (सामग्री राम मोहन और रवि रामन के 'इकॉनोमिक एण्ड पोलिटिकल वीकली' पत्रिका, 7 जनवरी 89, में लेख से ली है।)

साफ है, इस व्यवस्था में कुर्सी पर बैठने वालों के चेहरे-मोहरे बदलने से मजदूरों का भला नहीं हो सकता। कम्युनिस्ट क्रान्ति की राह ही मजदूरों की भलाई की राह है।

आटोपिन

16 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित आटोपिन फैक्ट्री 6 महीने बन्द रहने के बाद नवम्बर 88 में फिर शुरू हुई। मैनेजमेंट और यूनियन के बीच 200 मजदूर निकालने का समझौता हुआ था। कुछ आदमियों के हिसाब के बाद अब यहाँ सवा पाँच सौ के करीब मजदूर काम करते हैं।

मजदूरों का दो साल का बोनस बकाया है। मैनेजमेंट और यूनियन, दोनों ने कहा था कि जनवरी के शुरू में हर हालत में बोनस दे दिया जाएगा। इनके अन्य आश्वासनों की तरह यह वादा भी झूठा साबित हुआ। इस बार बकाया बोनस के लिए सब मजदूरों ने खुद 19 जनवरी को प्रोडक्शन बन्द कर दिया। मैनेजमेंट और यूनियन लीडर मजदूरों से काम शुरू करने की कहते रहे पर मजदूर टस से मस नहीं हुए। मैनेजमेंट और यूनियन लीडरों की कोशिशों के बावजूद 20 जनवरी को भी आटोपिन के सब मजदूरों ने काम बन्द रखा। रात में किसी ने काम चालू किया और 21 जनवरी को फैक्ट्री में प्रोडक्शन शुरू हो गया। यूनियन लीडर कह रहे हैं कि मैनेजमेंट एक साल का आधा बोनस 27 जनवरी को देगी। पर मजदूरों को इस पर भी भरोसा नहीं है।

मजदूरों में फूट डालने की कोशिशें हो रही हैं। अपनी एकता बनाए रख कर ही मजदूर कुछ कर सकेंगे।

बम्पी

जूते-चप्पल बनाने वाली 24 सैक्टर की इस फैक्ट्री ने तीन बोर्ड टाँग रखे हैं। कुल मिला कर इसमें 300 परमानेंट, 175 कैजुअल और 50 ठेकेदारों के वर्कर हैं। ठेकेदारों के अधिकतर मजदूरों को 400 रुपये महीना मिलते है और इनसे सबसे गन्दे व जोखिम वाले काम करवाए जाते हैं। कैजुअल मजदूरों को 450से 500 रुपये महीना मिलते हैं और इनसे 4 घण्टे जबरन ओवरटाइम काम करवाया जाता है। यहाँ रोला डिपार्ट में दो-तीन महीने में किसी न किसी मजदूर के दाहिने हाथ की उँगलियाँ कट जाती हैं। आमतौर पर कैजुअल और ठेकेदारों के वर्करों के ई०एस० आई० फार्म नहीं भरे जाते। हाथ कटे मजदूरों का कुछ दिन प्राइवेट डाक्टरों से इलाज करवा कर उन्हें दुत्कार दिया जाता है। रबड़ तैयार करते समय की गन्दी गैसों से यहाँ मजदूरों के साँस की बीमारियाँ बहुत हैं।

स्वत्वाधिकारी व सम्पादक शेरसिंह द्वारा आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद से प्रकाशित व अशोक कम्पोजिंग एजेन्सी द्वारा, मानस प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली-110031 में मुद्रित।